
अध्यात्मप्रकाश
ॐ



श्रीः

अध्यात्मप्रकाश

कवि शुकदेवकृत

कवित्त, दोहे, सोरठे, छंद, चौपाई इत्यादिमें
वेदान्त विषय उत्तमतासे वर्णित है
"नारदजी" मुरादाबाद निवासी द्वारा
संशोधित और परिवर्द्धित।



मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

संस्करणं- सन् १९९७ सम्वत् २०५३

मूल्य १० रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

श्रीरामकृष्णाभ्यां नमः

अथ अध्यात्मप्रकाशो लिख्यते

चकोर छन्द

स्थावरजंगमजीवजिते जगभांतिन भांतिन भेष-धरे हैं ॥ तामहिसत्यचिदानन्दरूपसों आतम एकप्रकाशकरे हैं ॥ ताविनुजानतेसिन्धुसों लागत जानते गोपदतुल्यतरे हैं ॥ वन्दतताहिकहै सुख-देव जु ब्रह्म सदासबहीतेपरे हैं ॥ १ ॥

दोहा—व्यासमथनकरि वेदसब, सूत्रजुकाढेसार।
श्रीगुरुशंकरदेवजी, कीन्हो बहुविस्तार ॥ २ ॥
तिन्हग्रंथनकोसमुझिमत, धरयो जु पर उपकारु ॥
भाषाकरिसुखदेवजी, रच्यो ग्रन्थ अतिचारु ॥३॥
जैसेरविकेतेजते, अंधकारमिटिजाय ॥ अध्यातम

प्रकाशते, त्यों अज्ञाननशाय ॥ ४ ॥ गुरूशिष्य संवाद अरु, वेदवचन उपदेश ॥ अध्यातमप्रकाश यह, भाषासरल सुवेश ॥ ५ ॥ अधिकारीजिज्ञासु अरु, शिष्यकहावतसोय ॥ तपसाबुनकारि देहके, पापन डारत धोय ॥ ६ ॥

छप्पय–वेदस्मृतिजेकहे धर्म्म अपने वर्णनके॥ तिन्हकर धोवै पापजन्मचन्मांतरनरके ॥ फलअभिलाषाछाँडकर्म्महरिप्रीतकरैंसब ॥ हृदयविमल जलहोयज्ञानवैरागयोगतब ॥ श्रुतियुक्तिसहित उदेश गुरुकरै शिष्यहियमें धरै ॥ विज्ञानसहित सुखदेवकविप्रगट ज्ञानमारगररै ॥ ७ ॥

कुंडलिया–जैसेवरषापायकै, जोतैखेतकिसान॥ त्योंप्रारब्धै पायकै, देहसुकर्म्मनिजान॥देहसुकर्म्म निजानखैंचइंद्रियमनसोधै ॥ बोवैवीर्यउपदेशवेदवचननिगुरुबोधै ॥ तबउपजेहढ ज्ञानरीतिखेतीकारि

ऐसे ॥ अनभौफलयौंलहै सुखमारगजैसे ॥ ८ ॥

कवित्त–इन्द्रिनकोजीत्योगुणखैंच कीनो हाथ मनपरउपकारहीलौंतिनैभाइयतहै ॥ वेदकेबखानि वेकोसारासारजानिवेकोभेदग्रंथ भांतिबेकोरूपगाइयत है ॥ एकरूपपहिचान्यौं सबहिनमेंसोइ जान्यौं आपुतेनाजुदोमान्यौंसोवताइयतहै ॥ ईश्वर लौध्यावैजीमें दृढभक्तिल्यावैतबऐसागुरुपावैतापैज्ञानपाइयत है ॥ ९ ॥

दोहा–गुरुसोंपूछैशिष्ययह,नमस्कारकरिध्यान॥नीकेकरमोसौंकहो,कासौंकहियतु ज्ञान॥१०॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ भूलगयोअज्ञानते, अपनोआतमरूप ॥ ताहीकोफिरिजानिवो,ज्ञान कहतकविभूप ॥११॥ साधन चार कहेगुरु, प्रथम एकवैराग ॥ पुनि विवेक समदमअवर,सुनि मुमुक्षु बडभाग ॥ १२ ॥ वैराग ॥ ब्रह्माइंद्रहिआदिजे, होतदेहध-

रिभोग॥काकवीटिसमतेगनै, बीतरागजेलोग १३॥
विवेक॥ देहप्रपञ्चअनित्यहै,आतमनित्यबखानि॥
सारासारहिजानिवो, यहविवेकसबमानि ॥ १४ ॥

अथ शमदमसमाधिलक्षण ।

सवैया--वासनात्यागसदाशमहै दमइंद्रियवृत्त कोनग्रहठानै । देखै नदोषविषेउपरामनिछावैहैदुःखजो सुःखनिमानै ॥ साधनवेदअचारजकीसुप्रमाणहिये सरधासोंबखानै॥ एकहैचित्तसमाधिबसे इहिभांति समाधि छसाधन जानै ॥ १५ ॥

अथ मुमुक्षु॥दोहा--जन्ममृत्युसंसारते,कैसेछुटियेमित्त ॥सोमुमुक्षुकहिये सदा, यहैविचारतचित्त ॥ १६ ॥ चारोंसाधनजेकहे, तिन्हैंयुक्तिजबहोय । तबजोपूछैआतमा,कहैगुरूपुनिसोय॥ १७॥नमस्कारकरजोरिकै, भेटहाथमेंल्याय ॥ कहोगुरूजीआतमा,कैसेजान्योजाय॥ १८॥श्रीगुरुरुवाच ॥ शिष्य-

मुमुक्षुविचारिकै, बोले गुरूदयाल ॥ वहैकहतेहौं जो कह्यो; अर्जुनसोंगोपाल ॥ १९ ॥ सामवेदके वचन हैं, तत्त्वंअसिपदतीन ॥ जान्योइन्हको अर्थ जिहि, लियोसार तिन्ह बीन ॥ २० ॥

चौबोला तत्त्वंपदईशजीवत्त्वंपदहै असिपद है असिपदब्रह्मकहावै॥मायामेंयहतीनभेदहैं एकहि वेदबतावै ॥ २१ ॥ शिष्यउवाचकहोगुरूजीएक ब्रह्मतेतीनभेद क्यों भाषें॥ कैसेभयेकौनकेलीने कौनरूपअभिलाषें ॥ २२ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ एकब्रह्मचैतन्यअखंडिततते उपजी इच्छा ॥ ताहीसोंमायाकहियतहै नीकेसुनिजैशिक्षा ॥२३॥ मायाजड चैतन्यब्रह्मकोतामेंभयोअभासा । सत रजतमत्रैगुणउपजायेतातेद्वैतविलासा ॥ २४ ॥ माया और प्रतिबिंब ब्रह्मको गुणनि सहित दोउ कीन्हे ॥ एकमांझिसतगुणअधिकारी दूजोरजतम लीन्हे ॥ २५ ॥ सतगुणअधिक बिंबअरुमाया

सोई ईशकहायो ॥ तमगुणअधिकबिंबयुतमाया प्रगट जीवपदपायो ॥ २६ ॥

दोहा--बिंबभुलान्योअपनपौ, तमगुणके अधिकार ॥ मायाकरवैचित्रता, कीन्हे जीव अपार ॥ ॥ २७ ॥ सोपाछेकारिकहैंगे,जीवनकोसबमर्म्म ॥ अबैकहतहैंईशको, रूपशीलगुणकर्म्म ॥ २८ ॥

अथ तत्त्वपदवर्णन ।

सवैया--शुद्धसतोगुणकेगुणतेप्रतिबिंबन आपुन भूलनपायो॥मायहिखैंचकियो अपनेवशईशवहैस वज्ञकहायो ॥ चौदहलोकरचेछिनमें अरुमेटतहै जबचाहैमिटायो ॥ शक्तिअनंतकहैसुखदेववहैपुरु षोत्तमवेदनगायो ॥ २९ ॥

सवैया--आपुनहीचतुराननह्वै सुखथावरजंगम जीवउपावै ॥ रक्षाकरैसबकीहारिह्वैअरुजीविकाता

कातहींपहुँचावे ॥ रुद्रहै अन्त संहारकरै अरु आपुहिकालहैसृष्टिनशावे ॥ योंजगखेलविश्वंभरको जैसे बालकखेलखिलौनामिटावे ॥ ३० ॥

दोहा-तीनदेहहैं ईशके, कारणसूक्षमथूल ॥ अबताकोवर्णनकरौं, पुरुषविराटसमूल ॥ ३१ ॥

चौपाई-प्रथमदेहकारणहैमाया ॥ ताके बल सबजक्तउपाया ॥ जाकी आदिनकोउलहै ॥ सत्य असत्यनवेदहुकहै ॥ ३२ ॥

दोहा-पंचतत्त्वतातेभये, पहिले सूक्षमरूप ॥ शब्दस्पर्शअरुरूपरस, गंधकहतकविभूप ॥ ३३ ॥

चौबोला-चौपाई ॥ तिनकीसूक्षमदेहभई जो हिरण्यगर्भ कहावै ॥ सबजीवनके आपुनहीं तेलिंगशरीरबनावै ॥ ३४ ॥

दोहा-इन्द्रियमनबुधिप्राणजे, सबके रचै विचार ॥ कहिये सूत्रजु आत्मा, ताही सो निर-

धार ॥३५॥ थूलतत्त्वपंचीप्रगट, तिनतेसबब्रह्मंड ॥ नभअरुपवनसुतेजमिलि, अरुपृथवीबहुखंड॥३६॥ थूलदेहजगदीशकी, थूलतत्त्वकीजान॥ ताहींमेंसब जीवकी, देहै लीजो मान ॥ ३७ ॥

कवित्त–शिरअवकासश्वासनासिका पवनवास सूरशशिनैनमुखअलिकोकरैहै ॥ हरिहरभुजा दोउहियेचतुराननहैउदरसकल लोक वाणीवेदर रैहै ॥ पर्वतहैं अस्थिरोमसकललोकबनसपतीमेघ मालावीरजपातालपायतरैहै । अलख अरूपजाकी महिमाअनूपदेखोवह विश्वभूप वहैविश्वरूप धरेहैं ॥३८॥ शिष्य उवाच ॥ दोहा ॥ समझोपुरुष विराट जो, कीन्होआपुबखान ॥ कबतेहैकबलोंरहत, कहिये सब परमान ॥ ३९ ॥ श्रीगुरुउवाच ॥ ब्रह्महीकी आयुसों, याकोबँध्योप्रमान ॥ सुनि अबतोंसोंकहतहौं, ताकोसबैविधान ॥ ४० ॥

सवैया–सत्रहलाखहजारअठाइसहैं युगसत्यचहूँपगजानो ॥ बारहलाखनवैछैहजारकोत्रेतातहांपगतीन बखानो ॥ आठसुलाखहजारसुचौंसठद्वापर द्वैपगधर्म्मके मानो ॥ चारसुलाखबत्तीसहजारको है कलियुगएकपगठहरानो ॥ ४१ ॥

दोहा–लाखतेतालिसवर्षअरु, बीतेबीसहजार । एकचौकरीयुगनकी, ताकोकह्योंविचार ॥ ४२ ॥ ऐतीऐतीचौकरी, युगनवजाहिंहजार ॥ ब्रह्माजूको एकदिन, तबकहियेनिरधार ॥ ४३ ॥ जेतेयुगको दिनकह्यो, तेतीहैपुनिरात ॥ सृष्टिरचीदिनकेउदय, रातिप्रलैह्वैजात ॥४४॥ ब्रह्माहीकेदिवसको, कल्प कहतसबतात ॥ जामैंचौदहइन्द्रहै, राज्यकरैंमरिजात ॥ ४५ ॥ वर्षतीनसैंसाठको, इनदिवसनको होय ॥ आयुदिव्यसोवर्षकी, ब्रह्माजूकी जोय॥४६ ब्रह्माहीके जन्मसों, प्रगटहोत संसार ॥ महाप्रलय

हैंमरणते, यहैजाननिरधार ॥४७॥ कहौंकहाल-गईशकी, मायाकोविस्तार ॥ याहीते संक्षेपसों कछुकछुकियोविचार ॥ ४८ ॥ ततपदईश्वरकोकह्यो, यहैसकलव्यौवहार ॥ अबसुनत्वंपदजीवको, जोनशायसंसार ॥४९॥ अथत्वंपदवर्णन ॥ चौबोला–पहिलेकहि उत्पत्तिईशकीवहैजीवकीजानौ ॥ वाकेशुद्धसतोगुणयाकेतमगुण अधिक बखानौ ॥ ॥ ५० ॥ शिष्यउवाच । दोहा–सतरजतमयहतीन गुण, मायातेकहिआय। तिनकेलक्षणकृपाकरि, मोहिंदेहुसमुझाय॥ श्रीगुरुउवाच॥ सकलवस्तुकोज्ञानअरु, बुद्धिविमलजबहोय । यहैसतोगुणजानिये, कहतसयानेलोग ५१ लोभलियेव्योहारजो सोरज गुणपहिचान ॥ आलसनिद्राविकलता, मोहतमो गुणमान ॥५२॥ सवैया--सच्चिदानंदस्वरूपअखंड सुआपुतमोगुणतेबिसरायो। एकतेजीवअनेकबनाये

सुमायाकियोअपनोमनभायो ॥ कारणदेहअवि-
द्यावहैअरुवाहीकोनामअज्ञानकहायो । सूक्षमथूल
उपाधिकोमूलवहैप्रतिकूलसुखानंदगायो ॥ ५३ ॥
दोहा--मायाकीद्वैशक्ति हैं, विक्षेप रु आवर्ण ॥
चेतनरूपभुलायकैं, ढांक्यौअंतः कर्ण ॥५४॥शि-
ष्यउवाच ॥ मूलअविद्यातुमकही, सबउपाधिको
देव॥देहलिंगअरुथूलको, जान्यौचाहतभेव ॥५५॥

श्रीगुरुउवाच॥सवैया--नासिकानैनत्वचारसना।
मिलकाननइन्द्रियज्ञानबखानो ॥ वाकनिपाण-
निपाँयउपस्थपदोमिलि पांचहिकर्मनिधानो ॥
प्राण अपानरुव्यानसमानउदानहिऔरमनोबुधि
सानो ॥ सूक्षमपांचहु तत्त्वनते यह सत्रहतत्त्वको
सूक्षमजानो ॥ ५६ ॥

शिष्यउवाच । दोहा--पांचतत्त्वसूक्षमनते, सत्र-
हक्योंकरकीन ॥ कहियेमोसौंप्रगटकरि, कामैको

परवीन ५७ ॥ श्रीगुरुउवाच ॥ वाक्यश्रवण आकाशते,प्रगटहो तयोंजान ॥ वह बोलै वहईसुनै, दोऊशब्दनिदान ॥ ५८ ॥ त्वचामानिये पवनते, प्रगटहोत रे मित्त ॥ दोउ स्परसहिधर्मकी नीके जानतचित्त ॥ ५९ ॥ नैनचरणयहजते, इन्द्रिय दोउकहाजु ॥ वे चाहत जारूपको,यहलेजाततहांजु ॥ ६० ॥ रसनानाभीदोउभये, जलतेसुनरेतात ॥ जानत रसकेस्वादको, समुझिदेखियेबात ॥६१॥ मूल द्वार अरु नासिका, यह पृथिवीते दोय ॥ वहैठिकानौगंधको, याहि ज्ञानसबहोय ॥ ६२ ॥ प्रान अपान समान अरु, व्यानउदानहिजान ॥ पांचठिकानेतेभये, एकैपवनबखान ॥६३॥ पाच-भूतकेअंशमिल, उपजोमनअरुबुद्धि ॥ सबइन्द्रिनकेस्वादकी, हैताहीतेसुद्धि ॥ ६४ ॥ पांचप्राणद्वैबुद्धिमन, इन्द्रियदशौगिनाय ॥ पांचतत्त्वतेयौंभये,

सत्रहदयेबताय ॥६५॥ कारणजोपहिलेकहे, अरु यालिंगसमेत ॥ कर्मभोगनिजकरनको, थूलदेहध-रलेत ॥ ६६ ॥ शिष्यउवाच ॥ कारणसूक्षमदेहद्वै, कहीसुसमझीदेव ॥ अबकहियेकरिकैकृपा, थूलदेह-कोभेव ॥ ६७ ॥ श्रीगुरुउ० ॥ चौबोला ॥ महा भूतपञ्चीकृतकरिकैसञ्चित कर्म्मउपावै ॥ सुख अरु दुखके भोग करनको थूलदेहछबिछावै ॥ ६८ ॥ शि० उ० ॥ दोहा--पञ्चीकृतसमझयोनमैं, तुम जुकहीभगवान ॥ तातेफिरविस्तारसों, कीजै प्रगट विधान ॥ ६९ ॥ श्रीगुरुउवाच ॥ महिकठोरअरु द्रवतजल, तेजउष्णताजान ॥ चलतवायुखाली जहां, तहाँ अकाश बखान ॥ ७० ॥ एकतत्त्वके पांचकर, पांचनतेपच्चीस ॥ पांचअंशन्यारेरहैं, मिश्रितकीने बीस ॥ ७१ ॥

छप्पय--अस्थिमांसत्वकरोमनाडिका प्रगटपञ्च-भुय । रक्तपित्त अरुस्वेदलारपुनिरुधिरनीरहुय ॥

भूख प्यास सुखप्रभा नींद आलसहितेजगनि ॥ धावनि कूदनि चलनि पसारनि सकुच सुपनभनि॥ शिरकण्ठ हृदय अरु उदर कटि यह अकाश विधिपञ्चलहि॥ पञ्चभूतपञ्चीकरनकरि पच्चीससु-खदेवकहि ॥ ७२ ॥

दोहा--एकएककेपांचकरि, कहेसुसबपच्चीस ॥ कौनतत्त्वमेंकोमिल्यौ, सुनौचित्तदेबीस ॥ ७३ ॥ एक एकके नौकरे, पाँचनपैंतालीस॥पाँचराखिचा-लीसके, मिश्रितकीनेबीस॥७४॥बीजमुख्यपृथिवी रही, मांसनीरनसतेज्ञु ॥ त्वचापवनमिलिकैभई, रोमअकासकहेज्ञु ॥ ७५ ॥ बीजमुख्यजलजानि-ये, पित्ततेजमिलहोय ॥ स्वेदपवनभूरुधिरमय, लारगगनयुतजोय ॥ ७६ ॥ क्षुधामुख्यतेजर-ह्यो, प्यासपवनमयमानि ॥ सुखमाजलआलस अवनि, नींदअकामबखानि ॥ ७७ ॥ धावन

मुख्यसमीरहै, गगनपसारनमाहि ॥ कूदनिते-जसकोचभू, चलननीरबिनुनाहि ॥७८॥ शिरअ-कासजोशब्दमय, कंठवायहियतेजु ॥ उदरनीरयु-तजानिये, कटिभूगंधकहेजु ॥७९॥ भूमस्थलज-लरेतअरु, तेजभूखपहिचान॥ धावनिपवनअकास शिर, पांचनिवालसजान ॥ ८० ॥ पांचअंशयेरा-खिकै, भयेवीसयोंलीन ॥ ज्योंनरघटपटपरस्पर, बदलत्त परमप्रवीन ॥८१॥ यहसबपंचीकरनको-तोसोंकह्योविचार ॥ थूलदेहधरजीवयह, करतभो-गसंसार ॥ ८२ ॥ तीनदेहतोसोंकही, कारणसूक्षम थूल॥ पंचकोशके भेदपुनि, ताहीमध्यसमूल॥८३॥

कवित्त अन्नमयथूलजातपवनप्राणमयमानपांच कर्म्मइन्द्री अरुमनमनामयहै ॥ पांचज्ञान इन्द्री और बुद्धि है विज्ञानमय कारण अविद्या सोतौ

आनँदमेंलयहै ॥ तीनदेहमांझ पंचकोश सुखदेवक-हैंनीकेकैविचारदेखभ्रमहींको भयहै॥कोसुन्हैनको-ऊकहैदेहेहैंनसोऊ एक आत्माको जाने सोतो आनंदकोचयहै ॥ ८४ ॥

शिष्यउवाच ॥चौबोला–संचितकर्म्मनतेपहिले हीथूलदेहतुमभाषी ॥ कर्मनकेलक्षणसुनवेकोमे-रीमतिअभिलाषी ॥ ८५ ॥ श्रीगुरूरुवाच ॥ दोहा–संचितअरुप्रारब्धये, क्रीयमानत्रयकर्म ॥ सुन हों तोसौंकहतहों, तिनके अद्भुतमर्म्म ॥८६॥ एक जन्मकेकर्म्मफल, भोगैजन्मअनेक ॥ संचित तो-सौंकहतहैं, सुखदुखसहितविवेक ॥ ८७ ॥ एकज-न्मकेकर्म्मफल, भोगैदूजीदेह ॥ सोप्रारब्धकहावई, सुनअबसहितसनेह ॥ ८८ ॥

सवैया–गर्भवसैनरऔपशुदेहजरायुज योनित-हांपदपावै ॥ पक्षीपतंगपिपीलन माबहुअंडजयोनि

तहां छबिछावै ॥ स्वेदतेस्वदजकीउत्पत्तिजुचील-रऔरजुवाँजोकहावै ॥ उद्भिजवृक्षतिनूकनिलौइ-हिभांतिजोजीवनकर्मबनावै ॥ ८९ ॥ कीटपतंग करैपशुपक्षिअधोगतिमेंजलजीवनिभावै। कैसुरलो-कबसैसुरह्वै कबहूँसुरराजकिसंपतिपावै। मानसह्वैसु-खदुःखसहैधर नीचकेऊँचकेलैप्रगटावै ॥ आतमए-कविचारविनायहिभांतिसोजीवनकर्मबनावै ॥९०॥ पुण्यकरैसुरलोकलहै अतिपापनतेसबनर्कनिधावै॥ पुण्यरुपापसमानदोऊमहिमानुषह्वै कुलमें छबि छावै ॥ जो सुखदेव लिलार लिख्यौ सुघटै न बढै अरुजायन आवै ॥ आतमएकविचारविनायहिभां तिसुजीवनकर्म्मबनावै ॥ ९१ ॥ जागतमेंसब विश्वबनायविलासकरैवसनैननहेरै ॥ ताहिकीवा-सनावासितह्वैस्वपनेमहमोहमनोरथघेरै । सूक्षमथू-लशरीरदोऊश्रमतेहितहोतसुखोपतिनेरै ॥ तीनअ-वस्थनमेंसुखदुःखलहैसुतोएकअदृष्टकेप्रेरै ॥ ९२॥

दोहा–इक्षानिक्षपरेक्षसों, त्रिविधकर्मकेभोग ॥
जन्मआदिरुअन्तलौं, कहतविवेकीलोग ॥ ९३ ॥
कर्म्महोतप्रारब्धते, मूरखजानतनाहिं ॥ मानले-
तअबमैंकरे, क्रीयमानते आहि ॥९४॥ जन्मधरावत
तेकरम, मानिलेतपुनिअज्ञ। वेइहैंप्रारब्धते, मानतहैं
योंतज्ञ॥९५॥ज्ञानउदयहियहोतही, संचितकर्म्मवि-
लात ॥ क्रीयमानहोतेनहीं, प्रारब्धैरहिजात॥९६॥
देहतीनमेंजीवकी, कहीसहितविस्तार। जातेतेरेचि
त्तमें, उपजैब्रह्मविचार ॥ ९७ ॥ पाँचभूततेदेहयह,
ताकोझूठीजान। सांचोएकैआतमा, सोविचार-
करमान ॥ ९८ ॥

सवैया–भौतिकदेहसदाजडहै वहआतमचेतन
ज्योतिहिसानौ ॥ देहअनित्यमरैजनमेवहआतम
नित्यअखंडित जानौ॥ देखियेदेह अमंगल रूपसो
आतमशुद्ध अदृष्टबखानौ ॥ ताकोआपकहैनरमूढ
कहांउनतेपशु औरहैमानौं ॥ ९९ ॥

दोहा--षटविकारहैं देहको, तेआनमके नाहिं॥
सुनअबतिनकोनामपुनि, समुझिदेखमनमाहिं १००
उपजतहै अरुढबत है, बालयुवा पुनि होय॥ वृद्ध
होतपुनिमरत है, षटविकारहै जोय ॥ १०१ ॥

सवैया--शौच अशुद्धभरीदुर्गन्धलसैबहुखंडसुथू-
लनिहारो ॥ रोगग्रसैबहुभांतिजरैसिथिलैपुनि आ-
मिषअध्रुवछारो ॥ होतनहोतधनेदिनमेंछिनमेंमि-
टिजातनलागतवारो ॥ देहसदादशदोषभरीयह
आतमब्रह्म अदोषविचारो ॥ १०२ ॥

दोहा-वेदकहतअरुमैंकहत,तूपुनिचित्तविचार॥
आतमचेतननित्यहै, देहअनित्यनिहार ॥१०३॥
शिष्य उवाच॥ तुमजुकहीसोंसबलखी, थूलदेहमैं
नाहि ॥ याहिछोडऔरैधरत, लिङ्गदेहमयआहि
॥ १०४ ॥ श्रीगुरुरुवाच । पंचभूतजडतेछई,
सूक्षमकीउत्पत्य ॥ अलखअनादिअखंडहै, तूतो
आतमसत्य ॥ १०५ ॥ शिष्य उवाच ॥ देहहोत

चैतन्यजिहि, इन्द्रियतिहिसमतूल॥ प्राणहोय क्यों औरनहिं; यहौकहतअतिमूल॥१०६॥गुरुरुवाच॥ सोवतमें भूषणहरत, जानतनाहीं कोय॥ प्राण होतचैतन्यतौ; चोरहिपकरतसोयप॥१०७॥

सवैया–कानकोकामनानाकरै, अरुणाकको कामनाकामनपैहोई॥ आँखकोकामनाजीभरै,अरु यँकरैं. अरुपायँकोकामनाहाथनसोई॥जानतआप- नेस्वादनकोदश, इंद्रिनमांझनचेतनकोई॥१०८॥

शिष्यउवाच॥ दोहा–स्वादपरस्परऔरके, इन्द्रियजानतनाहिं॥ ताते ये जडहैं सबै, हौंचे- तनमनमांहि॥१०९॥ श्रीगुरुरुवाच॥

दोहा–पंचतत्त्वकेअंशते, मनउपज्योयहिजान॥ सबइंद्रिनकेस्वादसों, तातेहैपहिचान॥११०॥ बातसुनतहूसुनतनहिं, कहतनाहिंमनठौर॥ तातेय हैविचारिये, चेतनहैकोइऔर॥१११॥ सुखपतिइ-

न्द्रियसहितमन, मिलतअविद्यामाहिं ॥ जागतहैत बकहतहै, आजकछूसुधिनाहिं ॥१२॥ स्वप्न्योंहै देख्योकछू,सोयगयोयहिरीत । यहजानीजिहिज्ञा- नसों,यहैज्ञानकीरीत ॥ १३ ॥ पञ्चतत्त्वतेहोतमन, ज्ञानभयेमिटिजात ॥ ताकोनरस्वरकहतहै, जाको उत्पतिघात ॥१४॥ सदाअनादिअनंतहै, सोआतम तूआय । तातेयहैविचारिकै, छोडअज्ञकेभाय१५ शिष्य उवाच॥सत्रहमेंसोरहकहैं, रहीजुवाकीबुद्धि। जानतहौंचेतनवहै, जाकोसबकीशुद्धि ॥ १६ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ अहंकारमनबुद्धिचित, एककहतहै चार॥एककहतहैबुद्धिमन, अंतःकरणनिहार॥१७॥ जैसेएकहिपवनके,प्राणहुयेहैंपाँच ॥ तैसे अंतःकर- णकै, भेदचारपुनिसांच ॥ १८ ॥ जबचाहतहैंवस्तु कछु, चित्तकहतहैंताहि॥यननकलपनाजबकरै, मन कहियेपुनिवाहि ॥१९॥ मैंयहलीन्हेंलेतहौं, अहं- कारयहजोय ॥ सबकी जब निश्चयकरै, बुद्धि

नामहैसोय ॥१२०॥ जैसेब्राह्मणएकही, नामक्रिया तेदोय। रोटी करै रसोइयाँ, पढै सो पंडित होय ॥ २१ ॥ बुद्धिते परे जो आत्म है, यहजुकही भगवान ॥ अरुपुनिआतमबोधसो, शंकरबोध निधान ॥ २२ ॥ परेहैइन्द्रियदेहते, मनइंद्रियते जोय ॥ बुद्धिकहीमनतेपरे, बुद्धिते आतमसोय ॥ २३ ॥ सुखदुखइच्छारागये, सबैबुद्धिकोधर्म्म॥ सुषुपतिमेंयहसबमिटत, रहत आत्मापर्म्म ॥२४॥ शिष्य उवाच ॥ कह्योआपसमझोसुमैं, देहदोयहाँ नाहिं ॥ अबआतमकासोंकहौं, याशरीरके माहिं ॥ २५ ॥ श्रीगुरुरुवाच । न्यारेन्यारेतैंलखे, सब-हीकेगुणरूप ॥ जानतनाहींआपको, यहै अजान-अनूप ॥ २६ ॥ कारणमूलउपाधिको, यहै तीस-रीदेइ ॥ आदि न ताकी जानिये, अंतज्ञानके गेह ॥२७॥ अहंकारबुधिसोकहै, तूजिनदेहिजगाय ॥ उठिहै परमानंदतब, मैं तू जग न समाय ॥२८॥

यहै अविद्यानींद है, स्वप्नतुल्यसंसार ॥ ब्रह्मल-
खैजबआपको. जागितवहैंविचार ॥ २९ ॥ शिष्य
उवाच ॥ रूपकौनहैब्रह्मको, काविधबसैशरीर ॥
कहियेमोसोंकरकृपा, ज्योंनशायभ्रमभीर ॥१३०॥

श्रीगुरुरुवाच॥कवित्त--मनबुद्धिइन्द्रियकोकार-
णचलायवेको सकलउपाधिनतेन्यारोरहै गातमें ॥
जैसे घटघटमांझ व्यापकअकासअरुन्यारोसुखदु-
खनतेदेख्यौअवदातमें ॥ तैसेरविज्योतिआगेसो-
वतते जींवजागे उठिउठिकामलागैसबैपरभातमें ।
अज अविनाशीपरिपूरणप्रकाशी सुखदेवसुखरा-
शीऐसे ब्रह्मलखिआतमें ॥३१॥ देहकेंप्रकाशकहैका
ठमाहिंअग्निजैसेचेतनप्रकाशकहैमनबुद्धिगातमें ॥
मनचक्षुरादिहूते न्यारो सबकालजानमनचक्षुरादि
हूंकोमनचक्षुतातमें ॥ मनचक्षुरादिनते पाइये
न रूप जाको अतिहीं अरूप एक अद्भुत
बतातमें ॥ अज अविनाशी परिपूरणप्रकाशी ऐसे

नित्यलखि सुखदेव सुखराशी आतमें ॥ ३२ ॥
मुखको अभास जैसे दर्पणमेंदेखियतमुखतेनन्यारो
ताहिगनियतवातमें ॥ ऐसेब्रह्मचेतनको बुद्धिमें अ-
भासपरचोताहीसों कहतजीवबहुविधगातमें ॥दर्प-
णकेटारेप्रतिबिंबमिटजात जैसे ब्रह्मकेविचारेसों
जीवमिटजातहै ॥ अजअविनाशीपारिपूरणप्रकाशी
सुखदेवसुखराशीऐसोनित्यलखिआतमें ॥ ३३ ॥
रविकोप्रकाशपायलोचनविलोकैरूप तैसेरविब्रह्म
कैप्रकाशतवदातमैं ॥ जैसेएकसूतमांझमणिकन
पोहियततैसेएकचेतनहैबुद्धिनकेगातमें ॥ सबहि-
मेंएकवहैसबहितेन्यारो रहै गगनके समाननमिल-
तकाहुबातमें ॥ अजअविनाशीपारिपूरणप्रकाशी
सुखदेवसुखराशी ऐसोनित्यलखिआतमैं ॥ ३४ ॥
सदचिदआनंदस्वरूप एकआतमाको बिंबपरे बुद्धि
नअनेकलखियतुहै । जैसेएकरविकेअनेकहीघटन
माहिंजलकोप्रतापन्यारोन्यारोपेखियतु है । कर्म-

नकेवशजीव दुःखसुखभोग करै नीचऊंचमध्ययो-
निमध्यपेषियतुहै ॥ पवनकेवशजैसेसरवरनिकंपे-
जलचंचल ह्वैकोऊकोऊथिरदेखियतुहै ॥ ३५ ॥
दृष्टिकोछिपावैघनअज्ञजानै भानुछिपैऐसे शुद्ध आ-
त्माकोबंधननमान्यो है ॥ कहैसुखदेवजैसेश्वेतम-
णिमेंनरंगपासधरैजाकेताको रंगमानोसान्यो है ॥
जैसेजलमांझपरैचंद्रप्रतिबिंबआनिजलकेहलत वहै
हालतसोजान्यो है ॥ ऐसेजडबुद्धिमांहिंदेखिप्रति-
बिंबब्रह्ममूढनलैब्रह्मको जगतमाहिं सान्योहै ॥३६॥

शिष्य उवाच ॥ दोहा--ममस्वरूपहै आत्मा,
जडशरीरसोनाहिं ॥ विषयभोगकोकरतहै यहसं-
शयमनमाहिं ॥ ३७॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ विषयभो-
गव्यंजनरचे, धारीथूलशरीर ॥ इंद्रियकरसोकर-
तहै, भोगबुद्धिमनधीर ॥३८॥ इच्छासुखदुख
दोषअरु, धृतचेतनसंघात ॥ यहसबक्षेत्रजुधमहै,
न्यारोआतमतात ॥ ३९ ॥ देहकहतहैआपसों,

तबलौंकहियेअज्ञ ॥ ब्रह्मलखैज्ञानीवहै, आतमअ-
ज्ञनतज्ञ ॥ १४० ॥ तूछूटचोसंसारते. निःसंदेह
रहिनित्य ॥ लख्यौ आपुको आत्मा, यहैमुक्तिहै
मित्त ॥ ४१ ॥

कवित्त--सदचितआनंदस्वरूपसुप्रकाशजाको
समसबहीकेंउरअंतररहत है॥अचलअखंडअजअ-
क्रियअनंतगतिअद्वैअरूपइंद्रीमननागहतहै । निर-
विकारनिराधारनिर्विकल्पनिराकारकूटवत निर्गुण
निरंतरलहत है ॥ आत्माकोब्रह्मजानैकोअस-
क्तिमानैपंडितसयानेज्ञानताहीसोकतहै ॥ ४२ ॥

दोहा--वर्णाश्रमअभिमानहै,जबलगजियमेंमान।
वेदस्मृतिकी आज्ञा, येहेंसहीप्रमान ॥ ४३ ॥

कवित्त--पापअरुपुण्यदोउ पहियाप्रबलजाके
लोकअरुवेदरीतवासनाकीवारिकै ॥ कामक्रोध
लोभमोहकीलनसोंराख्योजर कहैं सुखदेव अब
कर्म्मनिविचारकै ॥ वर्णाश्रमऔर अभिमानकी

जंजीरजानसुःखऔरदुःखके किवार तोरडारिकै ॥ भ्रमकोनिवाररूपअपनोसम्हारसिंह निकस्योप्रबोधजबपींजराकोफारिकै॥४४॥शिष्य उवाच ॥ देहनाहींइन्द्रीनाहींमनबुद्धिप्राणनाहींकारण अविद्यानहींऔरसुखजेकहीं ॥ वर्णाश्रमनाहींजातिकुल धर्म्मनाहीं करता अरु कर्मनाहीं भोगतानजेकहीं ॥ मायाको विलासनाहींईशकोप्रकाशनाहींजिवचिदाभासनाहींभांतिभांतिभेषहीं॥जाग्रतसुपनसुषुपतिकोलखैयासदा तुरीयाप्रगटबोधरूपब्रह्मएकहीं ४५

दोहा--यहतौजान्यो आत्मा, तुमप्रसादतेदेव ॥
अबैकहीजैतत्त्वमसि, जोकहिवेहैभेव ॥ ४६ ॥

श्रीगुरुरुवाच ॥ यहसबत्वंपदरूपको, तोहिंसुनायो रूप ॥ अब सुन असिपद ब्रह्मको जो है सबको भूप ॥४७॥ इतित्वंपदार्थ ॥ अथअसिपदार्थ ॥ तत्पद ईश्वरको कहत, त्वंपदजीव बखान ॥ असिपदब्रह्म

अलिप्तहै, वहैदोउमेंजान ॥ ४८ ॥ यहईश्वरसर्व, ज्ञहै, जीवसदाअल्पज्ञ ॥ समकहियेजोदुहुँनको तौनजानियेअज्ञ ॥४९॥ तत्पदमानोसिंधुहै, त्वं-पदबूंदसमान ॥ असिपदपानीदोउमें, ताहि एकक-रजान ॥१५०॥ तत्पदजैसेभूपहै, त्वंपदमनहुकि-सान॥ असिपदमानस कोकहत, ऐसेजानोज्ञान५१ शिष्य उवाच॥ देवदत्तइकनामयहि, मिल्योविभ-वयुतमित्त॥ फिरवहदेखौंविपतियुत, कैसेआवेचित्त ॥ ५२ ॥ ईश्वरकीसर्वज्ञता, सोमायातेजान ॥ जीवनकीअल्पज्ञता, ताहिअविद्यामान ॥ ५३ ॥ वासमयेकोविभवतजि, अबकीतजौविपत्ति ॥ दृष्टि करोजोदेहपर, तौवहइहहैसत्ति ॥ ५४ ॥ जेउपाधि केमूलहैं, तिनकोझूँठेजान॥ शुद्धरूपजोब्रह्महै, एक आत्मामान ॥५५॥ जैसीदेहहैजीवकी, तैसीहैज-गदीश॥न्यारीन्यारीकहतहौं, दोउएककरिरीस ५६

कवित्त--जैसीदेहवाके ब्रह्माण्डअखंडरूपतैसेया केथूलजामेंहाथपायँलेखिये ॥ वाकेहैहिरण्यगर्भदू-सरोशरीरयाकेसूक्ष्मकहावैंतत्त्वसत्रहसुपेखिये।वाके आदिमायाजातेहोतसब काजसिद्ध याकेहै अविद्या जातेभूल्योअबरेखिये। वासोंजगदीशयासोंजीवकरी डारैएकब्रह्मकोविचारेतौनजीवईशदेखिये ॥ ५७ ॥

दोहा--तजैईशकीईशता, और जीव अविवेक॥ तीनोंपदको अर्थयह, तत्त्वं असिहैएक॥५८॥ तत्त्वं तुहीहै यह कह्यो, तत्त्वंपदकोअर्थ॥यहीवृत्तिजाके भई, सोसबभांतिसमर्थ ॥ ५९ ॥ सामवेदके वचन को, कह्योसबैं विस्तार॥ तैसे चारोंवेदके, महावचन हैंसार ॥१६०॥ अहंब्रह्मेतियजुर्वेदः ॥ १ ॥ प्रज्ञा-नमानन्दंब्रह्मेतिऋग्वेदः॥२॥ अयमात्माब्रह्मेति अ-थर्वणः॥३॥ तत्त्वमसीतिसामेवदर्वः ॥४॥ इतिमहा वाक्यानिमहापूर्वाणि ॥ दोहाः-ईशजीव अरु ब्रह्म हैं, जैसो एक बखान। यहै अर्थसब वचनको

बुधिबलजानो ज्ञान ॥६१॥ सदचिद हैं आनन्दजे, अचल अखंड अनंत ॥ स्वप्रकाश कूटस्थ अज-अक्रियब्रह्म अनंत ॥६२॥ शिष्यउवाच ॥ द्वादश एकैब्रह्मके, कहेबिशेषण नाम । न्यारेन्यारेकरिकहो, अबतिनकेगुणग्राम ॥ ६३ ॥

श्रीगुरुरुवाच । कवित्त · जाग्रतस्वपनकाजहोत । जाकीचेतनासोंसुषुपतिहूमेंहै साक्षीलौं विशेखिये । तीनहूंअवस्थनमें भावाभावरुपतुरीयास्वरूप याको एकरसअवरेखिये ॥ जैसे लोहचुंबकसमीपकरै चेष्टा-कोतैसे देह इन्द्रीमन आतम सोलेखिये ॥ एकरूप जगमें जगमगतजाकीज्योति जहांतहां जात चित्त चेतन सुदेखिये ॥ ६४ ॥

दोहा--सोसदब्रह्मस्वरूपहै, ज्ञानविनानलखाय । जीवजुन्यारो ब्रह्मते, भयो असत्या पाय ॥ ६५ ॥

आनंदस्वरूपछंद--देखैसुनेसूंघेखायचंदन त्वच कोलगाय वचनबनावेनीके जाकोजेलगतहै । हाथ

नग्रहणकरैपाँयनचलनकरैजोईहियेधरै ताहिसुखमें पगतहै ॥ कहैसुखदेवविषैमिलमनभावतीतौसुखसों लगतताछेमनहीपगतहै ॥ आनंदस्वरूपब्रह्मआनंद अखंडजानिस्वपनेकोआनँदसोआनँदपगतहै ६६॥

अद्वैत । दोहा—एक आत्मावसतहै, थावरजंगमदेह। जैसे मणिकामालके, सूतमाँझगुहिलेत ॥ ६७ ॥

अखंडलक्षण। सवैया -नाहिनजाकीसुजातकहूँअरु दूसरिजातिसोकौनगनावै । आपहीमाहिंनभेदकछू श्रुति नासिकानैनरुपाइनधावै ॥ रंगनरूप न वेद कहैमनइंद्रिनकेसुनकैसेहुपावै ॥ चेतनएकअखण्ड स्वरूपकहैसुखआपुकोआप लखावै ॥ ६८ ॥

दोहा—देहहोतअरुमिटतहै, तातेचंचलमान ॥ जन्ममृत्युजाकेनहीं, आतम अचलबखान ॥६९॥

अजत्व॥घटकोकारणमृत्तिका, ब्रह्मजगत्को जान। आदिरहितकारणरहित, अजकरताहिबखान१७०

आतमहैअक्रियसदा, देहक्रियाबुधरूप ॥ जैसेदीप

प्रकाशते, खेलतज्वारीजूप ॥७१॥ विषे बुद्धिपा-
तुरनचै, अहंकारढिगभूप ॥ इन्द्रीतालमृदंगयुत,
आतमदीपस्वरूप ॥ ७२ ॥ जाके नहीं विकार
कछु, रहतकूटवतनित्त ॥ सोकूटस्थकहावई, समु-
झिदेख चितमित्त ॥ ७३ ॥

अथ अनंत कवित्त-प्रथमहिंमायामेंप्रवेशहैआ-
कासवायुतेजनीरपृथ्वीमोंव्यापकअनंतहै ॥ थिरचर-
जीवजेतेजगमेंजगमगतसबमेंप्रगटएकचेतन अनंत
है । ऐसेघटमठमध्यव्यापकआकाशअरुकहैंसुखदेव
यहू पहिलेसनंतहैं॥रूपहैनरेखजाकीमहिमा अनंत-
ताकीआदिहैनअन्ततातेआत्माअनन्तहै ॥ ७४ ॥
अथस्वरूपस्वप्रकाशलक्षण ॥ औरवस्तु चाहिये
तौदीपकप्रकाशियतदीपककेचाहिवेको दीपकन-
चाहिये ॥ औरसबदेखिवेकोआंखिसुखदेवजैसेआं-
खिनकेदेखिवेकोकौनअवगाहिये॥रविको प्रकाश

पायसबमेंप्रकाशहोतरविमोंप्रकाशजैसे सो तहाँस-
रा राहिये । अग्निहीमेंदाहशक्तिआपहीतेहोत जैसे
तैसे सुप्रकाशएकआत्मासुआहिये॥७५॥ब्रह्म क-
वित्त ।शेषकेसहस्त्रमुखजीभद्वैहजारतातेनयेनयेनाम
नितलेतहीरहतुहै ॥ एकब्रह्मअंखडजाकीपावतन-
पार कोऊ ऐसेऐसेकोटिकोटिरोमलहियतुहै॥कहैं
सुखदेवएक अद्वैतपुरुषजासों नेतिनेति कहीना
प्रमाणचहियतु है ॥ सदचिदआनँदस्वरूपअवि-
नाशीपरिपूरणप्रगटपरब्रह्मकहियतुहै ॥ ७६ ॥

दोहा—यहद्वादशविस्तारमों, कहेविशेषणचारु।
ऐसेजानैआपको, यहैवेदकोसारु ॥ ७७ ॥

शिष्य उवाच ॥ न्यारेन्यारेसब कहे, बलविक्रम
अरुनाम ॥ रूपकहाहै ब्रह्मको, लहौंज्ञानकोधाम
॥७८॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ अप्रमाण अद्वैतहै, अरु
चैतन्यसुभाय ॥ मनइन्द्रियगहिसकतिनहिं, क्यों
करवरण्योजाय ॥ ७९ ॥

कवित्त-काननकोनादनाहीजीभकोसवादनाहीं वचनकोवादनाहींजुगतिसोंजोकहै ॥ आँखिको दिखाव नाहीं नाकको सुंघावनाहींकरकोगहाव नाहीं पायँकिनरोकहै॥मनकारिजानोनाहीं बुद्धिउन मान नाहीं दूसरोप्रमाणनाहींप्रगटऐसोकहै ॥ असतप्रपंचकैसे सत्यपहिचानै आपआपुसुखजानैदूजोमाने बिनकोकहै ॥ १८० ॥

दोहा-एकब्रह्म अद्वैतहै, ताकी उपमाकौन ॥ विनउपमासमझतनहीं, अज्ञकहावतजौन ॥८१॥ जोलक्षणआकाशको, वहैब्रह्मकोदेख ॥ यहजडवह चैतन्यहै, यहैभेदपुनिलेख ॥ ८२ ॥

कवित्त-व्योमहीमें सातद्वुर सातलहैं सातलोक व्योंमहींकेमाझलोकालोकलेखियतुहैं।व्योममेंजगत औरजगतमेंव्योमऐसेघटमांझ अरुन्यारोदेखियतु हैं ॥ कहैसुखदेवजैसेजीवईशभेदवामेंतैसेघटमठ

भेदयामेंपेखियतुहै । औरसबलक्षणसमानजान व्योमकेपरब्रह्ममांझचेतनतासोविशेषियतुहै ॥८३॥

शिष्य उवाच ॥ दोहा—कह्योप्रपंचअशक्तिको, शक्तिब्रह्मसोंएक ॥ दूजोभयोअशक्ति क्यों, रहैएक-कीटेक ॥८४॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ एकैकेवलब्रह्म है, भेदप्रपंचनमान । नित्यअनित्यविवेककरि, दूर करत अज्ञान ॥८५॥ जोकहतेयहपहिलही, देहआत्मा एक ॥ तौआतमनहिंजानतेउँ, गहिलेतेउँयह टेक ॥८६॥देहआत्माभिन्नकहि, देहममतछुटि जाय ॥ भयो आत्माआपजब, तब सब एकै आय॥८७॥ अरिल्ल ॥ एकब्रह्मअद्वैत भेदकहब्रह्मवेद है ॥ और भेदकछुनाहिंभेदअनभेद है॥ यहैबादअद्वैतसिद्धकर हीगहौ ॥ जानआपुकोआपमुक्ति पदकोलहौ ॥८८ दोहा ॥ जगकोकारणब्रह्महै यहनिश्चयकरजोय ॥ भूलनमनमेंलाइये कारज कारणदोय॥८९॥शिष्य उवाच ॥ कारणतो दो भांतिहैं, उपादाननिरमित्त॥

कहियेतामें कौनहै, वहअविनाशीनित्त ॥१९०॥
श्रीगुरुरुवाच ॥ कारणएकैब्रह्महै, दोउभांति तिहि
जान। उपादानअब कहतहै, फिरनिर्मित्तबखान९१
कवित्त–माटीसों कहतघट काठसोंकहतमठसूत-
सोंकहतपटपीतपाटआनेते, लोहेसोंकटारीकहैपीत
रसोझारीकहैकांसीतों कहतथारी भोजन कसानेते।
कहैसुखदेवजैसेजलसोंतरंगकहैंतुंगकहैं तांबेमांझरां
गलपटानेते,कंचनसोंकंकअरुकिंकणीकहततैसेब्रह्म
सोजगतकहैआपविनुजानेते ९२ गंधबनगरजैसेवा
दरमैं देखियतनीलताअकाशमांझखालीकोभरमहै।
जैसे सूखेठूंडआगेपुरुषसों निशिलागे जेवरीअंधेरे
मांझसांपजोभरमहै। कहैंसुखदेवजैसेफटिककोहीरा
जानैलालकोअंगारमानैजानतगरमहै।रूपौसीपइवेत
नमेंनीरलखैरेतनमेंऐसेब्रह्मचेतनमेंनगकोभरमहै९३
चसमाकेदियेजैसे छोटोहूबड़ो तो लागै दूरते नि-
हारैबडोछोटोसोंलगतहै ॥ काचकीधरणिमांझनीर

ऐसोदेखियतनीरमांझकहूंकहूँ काचसोंलगत है। नावकेचलतरूखतीरकेचलतलागेबादरके दौरे मानोचन्द्रमाभगतहै। जैसोइन्द्रजालभ्रमपांखकापरेवा भासैजैसे ब्रह्मचेतनते भासतजगतहै ॥९४॥ शिष्य उवाच ॥ दोहा-ब्रह्मनित्यचैतन्यहैं, जगअनित्य जडजान ॥ उपादानक्योंकरभयो, जडकोचेतनआन ॥९५॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ चेतनतेजडहोतहै, जडतेचेतनहोय॥यह प्रत्यक्षहिदेखिके,संशय डारो धोय॥९६॥यहशरीरचैतन्यहै, तातेनखजडहोय ॥ गोबरजडतेहो प्रगट, गुबरीलाचितजोय ॥ ९७ ॥

शिष्य उवाच ॥ दोहा-यहतोजानीजोकही, उपादानकीरीत ॥ अबनिमित्तकिहिभांतिहै, सोकहिये करमीत ॥९८॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा ॥ सांख्यवेदऔरस्मृतिके, कहेग्रंथबढिजाय ॥ ताते उपमा युक्तिसों, प्रगटदेतसमझाय ॥ ९९ ॥

कवित्त-जैसेघटकारजको कारण कहत दोई

उपादानमाटी औ निमित्त जो कुम्हारहै ॥ ऐसे पांचतत्त्वगुणतीन ह्वै जगतभयौ, आपनही जीव-ईश आपकरतारहै ॥ माटी औ कुम्हारन्यारोएकह तसोचभारोताते औरउपमादैंकियो निरधारहै । जालाहै निमित्तउपादान जैसेमकरी है तैसी भांति जगको विचारब्रह्मचार है ॥ २०० ॥

दोहा--कारजकारणकरकह्यो, यहतो सों व्यवहार। कारजकारणतेंपरे, सोहैतत्त्वविचार ॥ २०१ ॥

कुण्डलिया॥जैसे घटको घटकहैं,माटीकारणजोय घटतजमाटीही रही, काकोकारणहोय। कारणका-कोहोययहकारजऐसेजानो ॥ जगतब्रह्मजोकहैप्रगट निरुपाधिबखानो॥ पुत्रपितातेहोयपुत्रविनपिता न तेसै॥कारणहूंमिटजायतजैकारजको जैसे ॥२०२॥

कवित्त--चेतन कहै जो कहूं और जड होय कछु सत्य कहौं ताते जो असत्य और लहिये ॥ आनंदस्वरूपकहौंतोजोशोकजानो कहूंएकतो कहूं

जोदूजोरूपऔरगहिये॥जोकहूँअखंडखंडखंड और होय कछु, चलहोय औरतो अचलकाय कहिये॥ जानियह वेदसुखदेव नेतिनेतिकहे आपको विचार चुपचापआप रहिये॥ २०३ ॥ अजतौकहौं जोदे-खौं औरको जनमकहींअक्रियकहूँजोकरतार और लहिये ॥ कूटवतकहूजोलुहारवत होय कोउ अंत-वत् होयतोअनंतवाहिं कहिये॥ स्वप्रकाशकहूँजो देखैया औरहोय कोईब्रह्मतोकहूँ जोकोउऔरजीव गहिये ॥ गूँगो गुड खायताको स्वादनाबखान्यो जाय तैसे आपहीकोपायआपचुप्परहिये ॥२०४॥

दोहा–ऐसोब्रह्मस्वरूपहै ताहि आत्माजान ॥ अबतेरेप्रारब्धनहिं, कछूलेहिपहिचान ॥ २०५ ॥

कवित्त सोवतमें जैसेदेह धारिकै मनोरथकोपूत भयोकाहूकोखिलायोतिन्हवारते ॥ शिशुतानिवा-

रच्योपुनिवेदपढि चारो सब कुटुमसँभारयो काका बाबा और सारेते ॥ कहैंसुखदेवपूतनातीउपजाये भांति भांतिनसिखायेपापपुण्यकरपारेते ॥ जागतहींजैसे सबस्वपनेको झूठोजानै जागतकेजाने तैसे आतमविचारेते ॥ २०६ ॥ कवित्त ॥ सोवतस्वपनमांझनीचजैसे राजाहोत जागतमैंलेसताकोरंचक नदेखिये ॥ जैसेबाँझपूतकी लराईकेउराहनेकीकोनकहैबातकाकेउरअवरेखिये ॥ कहैसुखदेवजैसेगगनकी गंगामांझ फूलेअरविंदताकीसौरभविशेखिये ॥ तैसेझूंठेजगमांहिझूठोही शरीर जान ताके कियेकर्मनकोसांचे करलेखिये ॥ २०७ ॥

दोहा-ब्रह्मरूपतबहीहतो, जबहोअज्ञस्वभाय ॥
ज्ञानभयेकछुऔरनहिं, वहैब्रह्मअबआय ॥ २०८ ॥

भूलेकोसमुझावहीं, वेदऔरगुरुलोग ॥ करतऔर-तेऔरनहिं, क्रियाकर्मके योग ॥ २०९ ॥

कवित्त–कोरीदशचले गाँवबीच नदीउतरांउ पै-रिंपैरिके सुभाउ पारभ्रम आयोहै ॥ जोईगनिदेखे सोईआपको नलेखै एकबूडो अवरेखै महासोचउ-पजायोहै ॥ औरजबपंथीआये न्यारेन्यारे समझाये गिनिकैदशोबताये तबसुखपायोहै ॥ ऐसेसुखदे-वगुरुदेवउपदेशकरि तेरोही स्वरूपफिरतोहिं सम-झायोहै ॥ २१० ॥

शिष्यउवाच॥दोहा–जान्योतुवपरसादते,अपनो आतमरूप ॥ अनुभवकासोंकहतहैं, औविज्ञानअ-नूप॥ २११ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ चिदसदजानतब्रह्म को, तौलगकहियतज्ञान ॥ ब्रह्मआपहीकोलखै,सो विज्ञाननिदान ॥ २१२ ॥ जैसेनरअज्ञानमें, कहत

देहकोआप ॥ त्योहींजबब्रह्मकहै, ज्ञानहृदय आलाप ॥ २१३ ॥ शिष्य उवाच मुक्तिभयोसंचय गयो, लख्योआपनोरूप ॥ रहीदेहव्यवहारसों, का विधिकरोअनूप ॥२१४॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ अष्टावक्र कोवचन ॥ भांतिभांतिभोगनिकरै, फेरिदिगंबरहोय। पापपुण्यलागैनहीं ॥ ज्योंजनकादिकजोय॥२१५॥ वेदांतकोवचन ॥ जीवईशअरुजगत्को, आतम जानैजोय ॥ मनमेंआवै त्योंरहैं, ताहिनरोकैकोय ॥ २१६ ॥ गीताकोवचन ॥ लोकवेदकेकर्मसब, ज्ञानीकीनेजाय ॥ याकेकर्मनदेखिके, जक्तधर्मठहराय ।२१७॥जैसेजबअज्ञानमें, चलतहतौजिहिरीति॥तैसीविधिअबहूँचले, तजकर्मसोंप्रीति॥२१८॥ कवित्त ॥ नरसोंनजन्मनधर्मवेद शासनसोंविप्रसों वरणऔर आश्रमनगेहीसों ॥ कर्मसों प्रबलनअ-

बलविषैलंपटासोंजरासों भरमनभुलेआ और नेही सों ॥ गुरुसों ना वेदउपचारनाविचारऐसो अज्ञसों नरोगी अरुअसंगीयमानयेहीसों ॥ मनसो उपास-कसुबुद्धिसों नसंगी और देहसों देनहरो नदेवऔर देहींसों ॥ २१९ ॥

दोहा-यहवेदान्तहिकोछह्यो,सबसिद्धान्तनसार। सबैसमुझियेआपमों,सबमें,आपनिहार ॥ २२० ॥ लाखलाखइलोकको,ग्रंथनमेंजुविचार॥ सोमतकह्यो संक्षेपसों, भाषामाहिंनिहार२२१॥ जैसेसंभरिनोंन के, ढरशैलसमजोय।लीनेपैसाएकभर,कार्यआपनो होय॥२२२॥हतौजुकछुमतजानवौ, जानचुक्योतू सोय॥औरशास्त्रनकेमते, भूलनतिनतेजोय॥२२३॥ अथमीमांसा ॥ यज्ञादिककर्मनकरैं, देवलोकफल भोग ॥ कहतमुक्तिमीमांसिक, दुखके भये अयोग

॥२२४॥अथपातंजल ॥ जीवईशन्यारोकहत,पातं-
जलसबकाल॥दहैकलेशन योगकर, कहैमुक्तिसुख
लाल॥२२५॥अथसांख्यवचन । प्रकृतिपुरुष और
तत्त्वको,जाकेहोयविवेक । यहै मुक्तिसोसांख्यकह,
ज्ञानभयेसबएक॥२२६॥अथन्यायवैशेषिक । वैशे-
षिकअरुन्यायपुनि, दोऊतारिकज्ञान ॥ भेदवासना
जबलखी,सोइविशेषकजान ॥ २२७ ॥ आगमतंत्र
पुराणपुनि, पंचरात्रमतजान ॥ खैंचिआपनेपक्षको
डारैजगमेंजान॥२२८॥औरजोशास्त्रनकेमते, परे-
जगतमेंजाय॥कल्पनलौंछूटेनहीं, जन्ममृत्युतेभाय
॥२२९॥ अपनोमतयहवेदसे, सबते उत्तमजान ।
ताहीकोविश्वासकरि,भूलिऔरमतमान ॥२३०॥
शठधूर्तै औ नास्तिक, वेदविरोधीऔर ॥ तिन्हैं
नभूलसुनाइये, यहमतिमतशिरमौर॥२३१॥जिन-

केउरहरिभक्तिहै, औगुरुभक्तिसमान ॥ तिनके आगे खोलिये, यहउपदेशनिधान ॥ २३२ ॥ वेद सुमृतिकेवचनको, कहिसुखदेवविलास ॥ अध्यातमपरकाशते, तिनअध्यात्मप्रकाश ॥२३३॥ संवत्सत्रहसैवरष, पञ्चवनआश्विनजान ॥ एकादशि बुधकोभयो, शुक्लपक्षशुभमान ॥ २३४ ॥ व्यास पुत्रसुखदेवजी, संस्कृत अध्यातम् ॥ संस्कृतसों भाषा कियो; कविसुखभाषासम् ॥ २३५ ॥

इति श्रीअध्यात्मप्रकशसंपूर्ण

दोहा-बडेपरिश्रमसेकियो, यापुस्तककीशुद्धि
भई रामकी कृपाते, मोहिंनहीं कछुबुद्धि॥
सवैया-पियकी सुरति विसारिकैसजनीकहि
कोपीहर बैठी होनार॥ ज्ञातको घांघरापहिरलेआ-
लीकपटकीचूंदरदीजेउतार॥ सत्यकोचुरलानेहर-
थुनिंनामकोलटनलीजैसम्हार॥ नारद पिय-
नेबुलाहरीगोरीभाललिखीलिपिकोसकेटार॥१॥
भजन-मारगमेंघेरोचारठगन॥आस्ताई॥ लेलेशस्त्र।
खडेचारोंदिशिकाहूभांतिनहिंदेतभगन॥१॥ बडे
बडे ऋषिमुलिजेलूटेशिवजीकोईनकियोनगन॥२॥
नारदमुनिकोऐसेनिपटेभूलगयेसबजोगजतन॥३॥
इति



मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

